मध्यप्रदेश शासन के स्कूल शिक्षा विभाग की अधिसूचना क्रमांक एफ 46-9/99/सी-3/20
भोपाल दिनांक 14 जून 1999 के अनुसार चुनी हुई शासकीय माध्यमिक शालाओं में प्रयोगात्मक रूप से प्रचलन हेतु अनुमोदित एवं निर्धारित।

मानचित्र के आंतरिक विवरणों को सही दर्शाने का दायित्व प्रकाशक का है।

द्वितीय संस्करण (संशोधित)
प्रथम मुद्रण 1993
द्वितीय मुद्रण 1995
तृतीय मद्रण 1996
चतुर्थ मुद्रण 1999
पुनः मुद्रण 2001

द्वितीय संस्करण (संशोधित)
प्रथम मुद्रण 1993
द्वितीय मुद्रण 1995
तृतीय मद्रण 1996
चतुर्थ मुद्रण 1999
पुनः मुद्रण 2001

आवरण चित्र 'देश का पर्यावरण' से साभार

मध्यप्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम की ओर से एवं उनके लिए आदर्श प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित।

सामाजिक अध्ययन

कक्षा छः

(प्रायोगिक संस्करण)

मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम, भोपाल
2001

आपस की बात

मध्य प्रदेश की माध्यमिक शालाओं में विज्ञान शिक्षण में नवाचार करने का एक प्रयास 1972 में दो स्वयं-सेवी संस्थाओं (किशोर भारती, बनखेड़ी व मित्र मंडल केंद्र, रसूलिया) द्वारा शुरू हुआ था। यह था 'होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम'। शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार के इन्हीं प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए 1982 में एकलव्य संस्था बनी। शालाओं में नए परिप्रेक्ष्य से सामाजिक अध्ययन, भाषा व गणित सीखने-सिखाने की तैयारी एकलव्य ने शुरू की।

वर्ष 1986-87 में, राज्य शैक्षणिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद के सहयोग से माध्यमिक शालाओं के लिए सामाजिक अध्ययन विषय में एक नवाचार कार्यक्रम शुरू किया गया। इसके अन्तर्गत प्रति वर्ष कक्षा 6,7 व कक्षा 8 की प्रायोगिक पाठ्य सामग्री एकलव्य द्वारा विकसित की गई व 3 ज़िलों की 9 माध्यमिक शालाओं में लागू की गई। छात्रों व शिक्षकों की भागीदारी से प्रायोगिक पाठों की कमियां व खूबियां उभरकर आईं। विषय के विशेषज्ञों व शिक्षा में रुचि रखनेवाले कई लोगों ने भी इन पाठों की समीक्षा की। इन विवेचनाओं के आधार पर प्रायोगिक पाठ्य सामग्री का संशोधन किया गया व प्रति वर्ष एक-एक कक्षा की पाठ्यपुस्तक का संशोधित संस्करण प्रकाशित किया गया।

पाठ्य सामग्री के अलावा परीक्षा प्रणाली में भी संशोधन किए गए। इसमें सबसे महत्वूपर्ण है "खुली पुस्तक परीक्षा" जिसमें परीक्षा में पुस्तक ले जाने की अनुमति है। सामाजिक अध्ययन में ऐसा प्रयोग स्कूली स्तर पर पहली बार किया गया है। अतः ऐसी परीक्षा के उद्देश्य और स्वरूप के बारे में भी कुछ कहना ज़रूरी है।

सामाजिक अध्ययन के संदर्भ में खुली पुस्तक परीक्षा के मुख्य उद्देश्य हैं - पुस्तक से जानकारियां ढूंढने की क्षमता, तर्क करने की क्षमता व सोच समझ के आधार पर अपने विचार अभिव्यक्त करने की क्षमता का मूल्यांकन करना। आशा है कि ऐसी परीक्षा से बहुत सारी जानकारी याद करने का बोझ बच्चों पर से हट जाएगा।

वर्ष 1989 से प्रायोगिक पाठ्यक्रम से पढ़े हुए छात्र माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा देते आ रहे हैं। उनके मूल्यांकन के दौरान बहुत सी ऐसी बातें समझ में आईं जिनसे पाठों को और सुधारने में मदद मिली है। इन्हीं प्रक्रियाओं से सुधारा हुआ कक्षा छः का यह नवीन संस्करण

प्रस्तुत है। इस बात में कोई शक नहीं है कि इस में भी आगे और सुधार व संशोधन की संभावनाएं हैं। हमारा मानना है कि पाठ्यसामग्री में नए अनुभवों व विचारों के आधार पर निरन्तर बदलाव होते रहना चाहिए।

शिक्षा में नवाचार केवल पुस्तक छापने तक ही सीमित नहीं है। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण, अनुवर्तन, फीडबैक, मूल्यांकन, परीक्षा तथा प्रशासन, इन सबका इकट्ठा बदलना ज़रूरी है। यह प्रायोगिक पुस्तक तो इस पूरी प्रक्रिया का अंशमात्र है। सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम का यह पूरा विषम काम अब ज़ोर पकड़ने लगा है। निस्संदेह यह काम आप सब के सहयोग से आगे बढ़ पाएगा।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा एवं एकलव्य के सहयोग से यह कार्यक्रम प्रयोग के रूप में मध्य प्रदेश की 8 शालाओं में चलाया जा रहा है। पुस्तक के प्रकाशन का दायित्व मध्य-प्रदेश पाठ्य-पुस्तक निगम ने उठाया है।

आज सारे देश में शिक्षा को एक नया मोड़ देने की गहन चर्चा हो रही है। हमें आशा है कि सामाजिक अध्ययन की शिक्षा में नवाचार का प्रयास करने की ये पहल उस दिशा में एक ठोस कदम साबित होगी।

पाठ्य सामग्री तैयार करने में इन संस्थाओं में कार्यरत अनेक विशेषज्ञों ने मदद की है - डा. अम्बेडकर शोध संस्थान, मधु, सागर विश्वविद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय; जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, इंस्टिट्यूट ऑफ पब्लिक एंटरप्राईज़, हैदराबाद, इंस्टिट्यूट ऑफ रूरल मेनेजमेंट, आणंद, क्षेत्रिय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल; स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खंडवा।

चित्रांकन में सहयोग दिया है राजेश यादव (इटारसी), कैरन हेडाक (चंडीगढ़), सतीश चौहान, आशा शर्मा, चीनू पटेल (भोपाल), ए.आर. शेख (देवास)। मानचित्र बनाने में यमुना सक्सेना ने मदद की। फोटोग्राफ हमने कई पुस्तकों और स्रोतों से लिए हैं। इनमें से हर एक का उल्लेख करना संभव नहीं है। इन सभी के हम आभारी हैं।

एकलव्य ग्रुप

जनवरी 1993.

शिक्षक ध्यान दें . . .

किताब की कुछ खास बातें

शुरुआत की हलचल - जब तक छात्रों के मन में पाठ के विषय में कोई हलचल न हो, उत्सुक्ता न जगे, तब तक बस पठन चालू कर देना अच्छा नहीं है। इसलिए लगभग सभी पाठों के शुरू में बच्चों से प्रश्न पूछे गये हैं। शायद पाठ के विषय के बारे में वे पहले से ही कुछ जानते हों? शायद उनके मन में उस विषय के बारे में कुछ बातें हों या, पाठ के चित्रों आदि को देख कर ही वे कुछ अनुमान लगा पा रहे हों? अपने मन की बात कहने के बाद जब वे पाठ पढ़ के देखेंगे कि वे कहां तक सही थे तो शायद ज़्यादा रूचि लेंगे और ज़्यादा सक्रिय रहेंगे। इन शुरूआती हलचल के सवालों को पाठ के शीर्षक के तुरंत बाद इस तरह छापा गया है।

कठिन शब्द - कई बार हमें अंदाज़ा नहीं होता कि कितने सारे शब्द बच्चों की समझ में नहीं आते हैं। ऐसे में कुछ सीखना उनके लिए कितना मुश्किल हो जाता है! इस किताब में कठिन शब्द काफी कम हैं। फिर भी, जो हैं, उन्हें मोटे अक्षरों में छापा जा रहा है। जिससे शिक्षक इन शब्दों के प्रति सचेत रहें और इनके अर्थों पर छात्रों के साथ चर्चा व पूछताछ करते हुए ही आगे पाठ पढ़ाएं।

विषय वस्तु से जुड़े विशेष शब्दों को भी मोटे अक्षरों में छापा गया है।

सवालीराम - सवालीराम एक काल्पनिक व्यक्ति है। उसके पास बच्चों के सवाल आते हैं और वह उन्हें जवाब लिख भेजता है। इस किताब के कई पाठों में बच्चों को आमंत्रण है कि वे सवालीराम से प्रश्न करें। बच्चों को प्रश्न करना तो अच्छा लगता ही है पर अपने नाम से आई चिट्ठी में अपने प्रश्नों का जवाव पढ़ना और भी अच्छा लगता है। उनके मन में और प्रश्न पूछनें का उत्साह बढ़ता है। हर पाठ के बाद आप बच्चों से पूछ सकते हैं कि क्या उनके मन में सवालीराम के लिए कोई प्रश्न है?

2. खेती की शुरुआत

सवालीराम का पता-

सवालीराम,
द्वारा एकलव्य,
कोठी बाज़ार,
होशंगाबाद, 461 001.

बीच के प्रश्न - आमतौर पर पाठ खत्म होने के बाद ही बच्चों से प्रश्न पूछे जाते हैं। इस किताब के पाठों के बीच-बीच में भी बच्चों से प्रश्न पूछे गये हैं। इनसे बच्चों में सजगता बनी रहती है। शिक्षकों को भी मालूम होता रहता है कि बच्चे पाठ की बातें समझ पा रहे हैं या नहीं। इन प्रश्नों को सिर्फ पढ़ के पाठ आगे बढ़ाते मत जाइए। बिना चूके इन प्रश्नों के जवाबों पर छात्रों के साथ चर्चा करिए। कुछ प्रश्नों के उत्तर कापियों में लिखने को कहिए। इन प्रश्नों को अलग ढंग से छापा जा रहा है - पहचान कर लें।

कहानियां - बच्चे कहानियां पसंद करते हैं। कहानियों के ज़रिए खुशी से सीखते-समझते हैं। इस किताब के कई पाठों में कहानियों का उपयोग है। कहानियां काल्पनिक हैं पर झूठ या गलत नहीं हैं। सच्चाइयों के अनुसार कुछ समझाने के लिए लिखी गई हैं। पाठ में कहानी के अंशों को अलग स्पष्ट करने के लिए उनकी बगल में दोहरी रेखा खींची है जैसे –

उपशीर्षक - बड़ा कठिन शब्द है यह पर बच्चों को इससे परिचित कराना ही होगा। क्योंकि इस किताब में बच्चों के सीखने के लिए कुछ नए उद्देश्य रखे गये हैं। बच्चों को ज्ञान या जानकारी देना मात्र किताब का मकसद नहीं है। इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण उद्देश्य है ज्ञान हासिल करने के तरीके सिखाना। किताबों से जानकारी मिलती है। किताबों में जानकारी अलग-अलग हिस्सों में संजोकर प्रस्तुत की जाती है। इन हिस्सों को उनके शीर्षकों से पहचाना जा सकता है। ये पाठ के उपशीर्षक होते हैं। पाठ के उपशीर्षकों की तरफ बच्चों को ध्यान ज़रूर केंद्रित करना चाहिए। ताकि, जब उनसे कोई प्रश्न पूछा जाए तो वे उत्तर खोजने के लिए पाठ के पन्ने बेतरतीब ढंग से पलटने में समय खराब न करें। किस उपशीर्षक के नीचे किसी प्रश्न की जानकारी मिलेगी यह समझें और उत्तर ढूंढें।

चित्र - इस किताब में चित्रों की बहुलता है। क्योंकि विषय वस्तु की छवि और समझ बनाने में बच्चों को इनसे बहुत सहूलियत होती है। कई चित्रों पर प्रश्न पूछे गए हैं। चित्रों का वर्णन करने में बच्चे अपने शब्दों का उपयोग सहजता से करते हैं। उनकी अपनी अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने के लिए भी चित्रों पर चर्चा करनी ही चाहिए।

मानचित्र - इस किताब के मानचित्र बहुत कोशिशों के साथ आकार में बड़े और स्पष्ट बनाए गए हैं। ये महज़ देखते हुए (या अनदेखा करते हुए) आगे बढ़ जाने के लिए नहीं छापे गये हैं। इनमें जो जानकारी दी है उसे बच्चों को स्वयं देख-समझ कर पता करनी है। इसीलिए पाठ के बीच-बीच में मानचित्रों पर प्रश्न हैं और उनके उत्तर पाठ में आमतौर पर लिखे नहीं गये हैं। मानचित्र से उत्तर ढूंढने की गतिविधि बच्चों को खुद करनी है।

बच्चे मानचित्रों की बहुत सरल बातें कई बार नहीं समझ पाते हैं। वे ज़मीन और समुद्र में फर्क नहीं कर पाते - इसलिए अधिकांश नक्शों में समुद्र में लहरें बनाई गई हैं। बच्चे नदियों की रेखाओं और देश की तटीय रेखा में भी फर्क नहीं कर पाते। यह देखते हुए हमने भारत व मध्य प्रदेश के नक्शों में नदी की रेखा उसके शुरू के भाग में पतली बनाई है और आखिरी भाग में मोटी बनाई है क्योंकि नदी जब निकलती है तो पतली रहती है। फिर जैसे-जैसे उसमें और सहायक नदियों का पानी मिलता जाता है वह चौड़ी होती जाती है। इस तरह की कई बातों का ध्यान आपको भी रखना है ताकि बच्चे नक्शा पढ़ना सीख सकें।

अभ्यास के प्रश्न - इनमें अलग अलग प्रश्न रखे गए हैं जिनका मुख्य उद्देश्य यह जांच करना है कि छात्र जानकारी हासिल करना और उसे समझकर व्यक्त करना सीखे हैं कि नहीं। याद रहे, परीक्षा में बच्चों के पास पुस्तक रहेगी। उन्हें यदि कोई बात ठीक से याद नहीं तो वे पुस्तक खोल कर देख सकते हैं। इसलिए उन्हें यह तो आना चाहिए कि कहां देखना है, कितना लिखना है, कैसे लिखना है। जानकारी ढूंढने का अभ्यास देने के लिए इस प्रकार के प्रश्न हैं -

"राजसूय यज्ञ के बारे में जानकारी पाठ के किस हिस्से में मिलेगी?

राजन्यों और जन के साधारण लोगों के बीच क्या फर्क था और वे एक दूसरे के लिए क्या-क्या करते थे? इस प्रश्न की जानकारी पृष्ठ 44, 45, 46 में से पढ़कर जानो और उत्तर लिखो।"

जानकारी ढूंढने के बाद भी बच्चे सटीक उत्तर न लिख कर आगे पीछे के बहुत से असंबद्ध वाक्य भी उतार कर लिखते हैं। उसका मतलब हुआ कि उन्हें 'क्या लिखना है' कि समझ नहीं है। सटीक उत्तर लिखने का अभ्यास देने के लिए इस तरह के प्रश्न हैं -

"बलि क्या थी सिर्फ दो वाक्यों में बताओ।"

किताब के अंशों की मदद लिए बिना अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर पाने का अभ्यास देने के लिए ऐसे प्रश्न रखे हैं जिनका उत्तर पाठ में कई जगह बिखरा है, या पाठ में सीधे ढंग से नहीं दिया गया है। जैसे -

"महाजन पद के राजाओं के पास क्या-क्या था जो छोटे जनपद के राजाओं के पास नहीं था? कोई भी तीन बातें समझा कर लिखो।" (इसमें दो पाठों में दी बातों की तुलना करनी है।)

"शिकारी मानव के बारे में 10-12 मुख्य बातें लिखो।"

"खेती की शुरूआत के बारे में यहां दिए अधूरे अंश को पढ़ो और पूरा करो।"

"अगर सिंधु घाटी के शहरों में उपयोग होने वाली लिखाई हम पढ़ सकते तो उन लोगों के बारे में क्या बातें जान सकते हैं?"

चित्रों, नक्शों व तालिकाओं के उपयोग की कुशलता सिखाने के लिए भी विशेष प्रश्न रखे हैं, जैसे,

"मानचित्र 2 और मानचित्र 3 की तुलना करो और बताओ कि क्या सही है - दोनों मानचित्र भारत के बारे में है / दोनों मानचित्र एक ही समय के बारे में है / दोनों मानचित्रों में बताई गई बातों में कोई फर्क नहीं है।"

"महाजनपद के समय का एक चित्र पृष्ठ 70 पर है। इस चित्र का वर्णन करते हुए 6-7 वाक्य लिखो। इस चित्र और पृष्ठ 31 के चित्र में क्या समानता और क्या अंतर है?"

आप इन उदाहरणों को ध्यान में रख कर नए प्रश्न बना कर परीक्षा आदि में उपयोग कर सकते हैं, बोर्ड परीक्षा के प्रश्न-पत्र में किताब में दिये प्रश्न बहुत कम रखे जाएंगे। इसलिए छात्रों के लिए नए-नए प्रश्नों को हल करने का अभ्यास ज़रूरी है। निश्चित प्रश्नों के उत्तर याद करने या रटने का कोई अर्थ नहीं है।

मिट्टी के खिलौने व झांकियां - पाठ में पढ़ी समझी बातों के बारे में मिट्टी से खिलौने और झांकियां बनाना बच्चों को बहुत मज़ेदार लगता है। इस गतिविधि में कोई खास झंझट भी नहीं है। बच्चे आनन-फानन में मिट्टी और पानी ले आते हैं। और बड़े उत्साह के साथ झांकियां बनाते हैं - चाहे सीढ़ीनुमा खेत हो, या खदान, या शिकारी मानव की गुफा का दृश्य।

जो बच्चे पाठ पढ़कर उत्तर देने में झिझकते हैं, क्योंकि उन्हें शब्दों की भाषा में अपने को अभिव्यक्त करने का हौंसला नहीं होता वे भी मिट्टी के खिलौनों के ज़रिए अपनी सोच-समझ बड़े हौंसले के साथ अभिव्यक्त कर देते हैं। इस गतिविधि को करते हुए विषय वस्तु की समझ और जानकारी उनके मन में गहराई तक बैठती जाती है।

हर शनिवार की बाल सभा में यह गतिविधि ज़रूर करवाई जा सकती है।

लगभग सभी पाठों में विषय वस्तु का वर्णन सरल और ठोस है अतः उसके आधार पर झांकियां बनाना बहुत आसान हो जाता है।

विषय सूची

इतिहास

1. शिकारी मानव..........	2
2. खेती की शुरुआत........	13
3. गांव का बसना	22
4. सबसे पुराने शहर - सिंधु घाटी के शहर	30
5. पशुपालक आर्य	40
6. छोटे जनपद बने	50
7. महाजनपद के राजा	61
8. महाजनपद के महानगर	70
9. नये प्रश्न नए विचार	81
10. राजा अशोक	88
11. विदेशों से व्यापार और संपर्क	96

नागरिक शास्त्र

1. एक दूसरे पर निर्भर	100
2. हाट बाज़ार और मंडी	108
3. ग्राम पंचायत	119
4. नगरों में सुविधाओं का प्रबंध	130
5. किसान और मज़दूर	140
6. ज़िला प्रशासन	149

भूगोल

दिशाएं	161
1. आओ मानचित्र बनाएं	167
2. मैदान, पहाड़ और पठार	174
3. मैदान का एक गांव - कोटगांव	178
4. पहाड़ों के बीच बसा एक गांव - पाहवाड़ी	190
5. पठार का एक गांव - बालमपुर	199
6. तहसील का नक्शा	208
7. पृथ्वी और ग्लोब	210
8. एशिया महाद्वीप	216
9. द्वीपों का देश इंडोनेशिया	219
10. जापान	230
11. एशिया के मरुस्थलीय प्रदेश	244
12 ईरान	254
13. एशिया - प्राकृतिक बनावट	253